अध्याय 1: दो बैलों की कथा

विषय-सूची 11 प्रश्नावली · 34 प्रश्न

प्रश्नावली 1.1	मेरे उत्तर मेरी तर्क (बहुविकल्पीय)	6 प्रश्न
प्रश्नावली 1.2	मेरी समझ मेरे विचार (लघु-उत्तरीय)	7 प्रश्न
प्रश्नावली 1.3	मेरी कल्पना मेरे अनुमान	2 प्रश्न
प्रश्नावली 1.4	मेरे अनुभव मेरे विचार	3 प्रश्न
प्रश्नावली 1.5	कहानी का सौंदर्य (विशेषता-तालिका)	1 प्रश्न
प्रश्नावली 1.6	कहानी का समय और समाज (स्वतंत्रता आंदोलन मिलान)	1 प्रश्न
प्रश्नावली 1.7	पशुओं के लिए कानून	3 प्रश्न
प्रश्नावली 1.8	हमारी धरोहर और संस्कृति	3 प्रश्न
प्रश्नावली 1.9	अलग-अलग और साथ-साथ	4 प्रश्न
प्रश्नावली 1.10	मार्ग खोजेंगे कैसे?	3 प्रश्न
प्रश्नावली 1.11	भाषा गढ़ते मुहावरे (व्याकरण की बात)	1 प्रश्न

प्रश्नावली 1.1 — मेरे उत्तर मेरी तर्क (बहुविकल्पीय)

प्रश्न 1

कहानी में हीरा और मोती का आपसी संबंध किस गुण को मुख्य रूप से दर्शाता है? (क) प्रतिस्पर्धा और प्रतिद्वंद्विता (ख) एकता और सहयोग (ग) गर्व और दंभ (घ) विद्रोह और क्रोध

हल

सही उत्तर: (ख) एकता और सहयोग।

पूरी कहानी में हीरा और मोती हमेशा एक-दूसरे के साथ खड़े रहते हैं — गया के यहाँ पहुँचने पर हल न चलाने का निर्णय, साँड से मिलकर लड़ना, काँजीहाउस में दीवार तोड़ने की कोशिश और झूरी के घर लौटने तक — सभी प्रसंगों में वे एकता और सहयोग का आदर्श प्रस्तुत करते हैं।

प्रतिस्पर्धा (क), गर्व (ग) या विद्रोह (घ) उनके संबंध का मूल गुण नहीं है; विद्रोह तो वे अन्याय के विरुद्ध एकजुट होकर करते हैं, न कि एक-दूसरे के विरुद्ध।

उत्तर: (ख) एकता और सहयोग — दोनों बैल हर परिस्थिति में मिलकर काम करते और एक-दूसरे की सहायता करते हैं।

प्रश्न 2

हीरा-मोती ने नया स्थान स्वीकार क्यों नहीं किया? (क) उन्हें भरपेट भोजन दिया गया। (ख) उन्हें बहुत मोटी रस्सी से बाँधा गया। (ग) मालिक ने बेचा, यह सोचकर उन्हें अपमान लगा। (घ) उन्हें अलग-अलग बाँधा गया।

हल

सही उत्तर: (ग) मालिक ने बेचा, यह सोचकर उन्हें अपमान लगा।

झूरी ने उन्हें गया के यहाँ भेजा; यह उन्हें अपने स्वामी द्वारा त्याग जैसा लगा। जिस घर को उन्होंने अपना घर समझ रखा था, उस घर से उन्हें बेदखल किया गया — यह अपमान ही उनके विद्रोह का कारण था।

भरपेट भोजन (क) या रस्सी (ख) या अलग बाँधना (घ) उनके प्रतिरोध का मूल कारण नहीं था।

उत्तर: (ग) मालिक ने बेचा, यह सोचकर उन्हें अपमान लगा।

प्रश्न 3

बैलों ने रस्सी तोड़कर घर लौटने का निर्णय क्यों लिया? (क) कष्टों से बचने के लिए (ख) स्वतंत्रता प्राप्त करने के लिए (ग) अभिमान की रक्षा के लिए (घ) अपनापन पाने के लिए

हल

सही उत्तर: (घ) अपनापन पाने के लिए।

कहानी में हीरा और मोती को झूरी के घर से गहरा लगाव था। गया के यहाँ वे अजनबियों के बीच थे जहाँ न अपनत्व था, न प्रेम। झूरी का प्रेम और अपने घर की यादें ही उन्हें घर की ओर खींचती थीं। काँजीहाउस से भागने के बाद वे अपने परिचित मार्ग पर चले तो उनकी थकान भी गायब हो गई — यह 'अपनापन' की शक्ति थी।

कष्टों से बचना (क) प्रमुख कारण नहीं, क्योंकि वे काँजीहाउस में रहते हुए भी भागे। स्वतंत्रता (ख) और अभिमान (ग) गौण कारण हो सकते हैं, पर मूल प्रेरणा अपनेपन की भावना थी।

उत्तर: (घ) अपनापन पाने के लिए — झूरी के घर और उसके प्रेम की याद उन्हें घर की ओर खींचती थी।

प्रश्न 4

गया द्वारा डंडे से मारने पर मोती का आक्रोश किस मानवीय मनोवृत्ति का द्योतक है? (क) स्वाभिमान (ख) अहिंसा (ग) पराधीनता (घ) अन्याय की रक्षा

हल

सही उत्तर: (क) स्वाभिमान।

जब गया ने हीरा की नाक पर डंडे जमाए, तो मोती का गुस्सा काबू के बाहर हो गया और वह हल लेकर भागा। यह प्रतिक्रिया किसी की पीड़ा पर आत्म-सम्मान जागने की भावना — स्वाभिमान — का प्रतीक है। एक न्यायप्रिय एवं स्वाभिमानी व्यक्ति अपने साथी पर होते अन्याय को सहन नहीं कर सकता।

अहिंसा (ख) मोती की प्रतिक्रिया का विपरीत है। पराधीनता (ग) तो वे स्वीकार नहीं करते। अन्याय की रक्षा (घ) शब्दावली भ्रामक है।

उत्तर: (क) स्वाभिमान — मित्र पर अत्याचार देख मोती का क्रोध उमड़ पड़ा, जो स्वाभिमान का प्रतीक है।

प्रश्न 5

कहानी में बैलों की 'मूक-भाषा' का प्रयोग लेखक ने किस लिए किया? (क) कहानी को रोचक बनाने के लिए (ख) मनुष्य जैसी चेतना दिखाने के लिए (ग) संवादों को छोटा रखने के लिए (घ) कथा में हास्य उत्पन्न करने के लिए

हल

सही उत्तर: (ख) मनुष्य जैसी चेतना दिखाने के लिए।
प्रेमचंद ने 'मूक-भाषा' के माध्यम से यह दर्शाया कि पशुओं में भी भावनाएँ, विचार और चेतना होती है। हीरा-मोती आपस में 'मूक-भाषा' में विचार-विनिमय करते हैं — यह मानवीयता का आरोपण (anthropomorphism) है जो पाठक को बैलों से जोड़ता है और उनके संघर्ष को प्रतीकात्मक बनाता है।
यद्यपि यह कहानी को रोचक (क) भी बनाता है, पर मूल उद्देश्य पशुओं में मानवीय चेतना का चित्रण है।

उत्तर: (ख) मनुष्य जैसी चेतना दिखाने के लिए — बैलों की भावनाएँ और विचार मानवीय स्तर पर प्रस्तुत किए गए हैं।

प्रश्न 6

'दो बैलों की कथा' को यदि स्वतंत्रता आंदोलन से जोड़ें, तो हीरा और मोती किसके प्रतीक हो सकते हैं? (क) भारत पर अंग्रेजों के क्रूर और अन्यायपूर्ण शासन के (ख) स्वतंत्रता संग्राम में पशुओं के योगदान के (ग) सत्याग्रह और अहिंसा के आंदोलन के (घ) स्वतंत्रता के लिए भारतीय जनता के संघर्ष के

हल

सही उत्तर: (घ) स्वतंत्रता के लिए भारतीय जनता के संघर्ष के।
हीरा और मोती उन भारतीयों के प्रतीक हैं जो दासता और अत्याचार को सहन करते हुए भी आत्म-सम्मान और स्वतंत्रता के लिए संघर्ष करते हैं। उनका गया के घर काम न करना, काँजीहाउस में साँड से लड़ना, दीवार तोड़ना — ये सब प्रतीकात्मक रूप से भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के दृश्य हैं।
सत्याग्रह और अहिंसा (ग) भी आंशिक रूप से सही हो सकते हैं, परंतु बैल साँड से लड़ते हैं — यह पूर्णतः अहिंसक नहीं। मूल प्रतीक स्वतंत्रता के लिए संघर्षरत जनता का है।

उत्तर: (घ) स्वतंत्रता के लिए भारतीय जनता के संघर्ष के — हीरा-मोती परतंत्रता में भी स्वाभिमान से जीने और स्वतंत्रता पाने का प्रयास करने वाले भारतीयों के प्रतीक हैं।

प्रश्नावली 1.2 — मेरी समझ मेरे विचार (लघु-उत्तरीय)

प्रश्न 1

"दूसरे दिन गया ने बैलों को हल में जोता, पर इन दोनों ने जैसे पाँव न उठाने की कसम खा ली थी।" जब बैल नए मालिक के यहाँ गए, तो उन्होंने काम करने से इनकार क्यों कर दिया था?

हल

हीरा और मोती झूरी के बैल थे। झूरी उन्हें बहुत प्यार करता था, उन्हें फूल की छड़ी से भी न छूता था।
जब झूरी ने उन्हें अपने साले गया के यहाँ भेजा, तो बैलों को लगा कि अपने स्वामी ने उन्हें बेच दिया — यह उनके लिए घोर अपमान था।
गया का व्यवहार भी कठोर था — वह उन्हें डंडे मारता था और खाने को केवल सूखा भूसा देता था।
नया स्थान, नए लोग और स्नेहहीन व्यवहार — इन सबने उनके मन में विद्रोह भर दिया।
इसलिए उन्होंने निर्णय लिया कि जिसने अपमान किया उसके लिए काम नहीं करेंगे।

उत्तर: अपने स्वामी झूरी द्वारा दूसरे के यहाँ भेजे जाने से बैलों को अपमान महसूस हुआ और वे गया के कठोर व्यवहार के कारण उसके लिए काम करने को तैयार नहीं थे।

प्रश्न 2

"गाँव के इतिहास में यह घटना अभूतपूर्व न होने पर भी महत्वपूर्ण थी।" बैलों का घर लौट आना कोई साधारण घटना नहीं है। कैसे? (संकेत — वे क्यों लौट आए, उनके और झूरी के मन में कौन-कौन से भाव रहे होंगे, क्या वास्तविक जीवन में भी ऐसा होता है आदि।)

हल

बैलों का रात को पगहा तोड़कर कई मील दूर से अपने घर लौट आना असाधारण इसलिए था क्योंकि इसमें केवल शारीरिक शक्ति नहीं, बल्कि प्रेम, आत्मीयता और बुद्धि भी थी।
बैलों के मन में झूरी के स्नेह की याद थी — वह फूल की छड़ी से भी नहीं छूता था। वह घर 'अपना' था।
झूरी के मन में भी प्रेम था — जब वे लौटे तो वह दौड़कर उन्हें गले लगा लिया।
वास्तविक जीवन में भी पशु अपने प्रिय स्थान और स्वामी से गहरा लगाव रखते हैं। कुत्ते, घोड़े आदि पशु कई बार दूर से लौट आते हैं — यह प्रेम और स्मृति का प्रमाण है।
यह घटना यह भी दिखाती है कि पशुओं में भी भावनाएँ होती हैं जो मनुष्य से कम नहीं।

उत्तर: बैलों का घर लौट आना प्रेम, आत्मीयता और बुद्धि का प्रमाण है — यह दर्शाता है कि पशु भी भावनाओं से बंधे होते हैं और अपने 'अपनों' की ओर खिंचते हैं।

प्रश्न 3

"मोती ने मूक-भाषा में कहा— अब तो नहीं सहा जाता, हीरा!" 'कभी-कभी संघर्ष करना आवश्यक हो जाता है' इस कथन को कहानी के उदाहरणों से सिद्ध कीजिए।

हल

कहानी में कई प्रसंग यह सिद्ध करते हैं कि संघर्ष आवश्यक हो जाता है —

1. गया के यहाँ — जब गया ने लगातार डंडों से मारना शुरू किया, तो मोती ने हल लेकर भागने का संघर्ष किया। बिना संघर्ष के वे और पिटते रहते।

2. साँड से टक्कर — काँजीहाउस के बाहर एक बड़े साँड ने उन्हें घेरा। हीरा ने कहा, 'इससे भिड़ना जान से हाथ धोना है; लेकिन न भिड़ने पर भी जान बचती नहीं नज़र आती।' — अतः संघर्ष अपरिहार्य था।

3. काँजीहाउस में — मोती ने रात-रात भर दीवार खोदी और तोड़ी, जिससे नौ-दस प्राणियों की जान बची। यह भी एक आवश्यक संघर्ष था।

निष्कर्ष: जब अत्याचार की सीमा पार हो जाए और सहन करने से जान या सम्मान का खतरा हो, तो संघर्ष ही एकमात्र उपाय बचता है।

उत्तर: गया का मार, साँड की चुनौती और काँजीहाउस की दीवार — तीनों प्रसंगों में संघर्ष न करना असंभव था; कहानी यह सिखाती है कि अत्याचार सहते रहना कायरता है।

प्रश्न 4

"जब पेट भर गया और दोनों ने आज़ादी का अनुभव किया..." हीरा एवं मोती 'स्वतंत्रता' और 'अपनापन' दोनों में से किस भावना से अधिक प्रेरित थे? कारण सहित लिखिए।

हल

हीरा और मोती 'अपनापन' की भावना से अधिक प्रेरित थे, न कि केवल स्वतंत्रता से।

तर्क 1 — काँजीहाउस से निकलने के बाद जब उन्हें मार्ग का ज्ञान नहीं रहा, तो वे भटकते रहे। परंतु जैसे ही परिचित मार्ग मिला, 'सारी थकान, सारी दुर्बलता गायब हो गई' — यह अपनेपन की याद की शक्ति थी।

तर्क 2 — वे सीधे झूरी के घर की ओर दौड़े। यदि स्वतंत्रता मुख्य प्रेरणा होती, तो वे कहीं भी स्वच्छंद विचरण कर सकते थे।

तर्क 3 — मोती ने मूक-भाषा में कहा था, 'हमारा घर नगीच आ गया' — घर का यह भाव 'अपनापन' का ही प्रमाण है।

निष्कर्ष: स्वतंत्रता उनका साधन थी; लक्ष्य अपने प्रिय झूरी और उसके घर लौटना था — अर्थात् 'अपनापन' मूल प्रेरणा थी।

उत्तर: 'अपनापन' — स्वतंत्रता पाने के बाद वे सीधे झूरी के घर दौड़े; घर की याद आते ही उनकी थकान मिट गई — यही अपनापन उनकी असली प्रेरणा थी।

प्रश्न 5

"बैलों ने जैसे पाँव न उठाने की कसम खा ली थी।" 'अत्याचार सहना भी अन्याय में भागीदारी है' — क्या आप इस कथन से सहमत हैं? अपने उत्तर के कारण भी बताइए।

हल

हाँ, इस कथन से सहमति है।

कहानी का उदाहरण: यदि हीरा और मोती चुपचाप गया का अत्याचार सहते रहते, तो गया और अधिक अत्याचार करता। उनके प्रतिरोध से ही गया को रुकना पड़ा।

तर्क 1: जो अत्याचार को चुपचाप सहता है, वह उसे प्रोत्साहन देता है। जो न बोले, उसे अत्याचारी कमज़ोर समझता है।

तर्क 2: प्रेमचंद ने स्वतंत्रता आंदोलन के संदर्भ में यही संदेश दिया — भारतीय जनता जब तक अंग्रेजी शासन का विरोध नहीं करती, स्वतंत्रता नहीं मिल सकती थी।

तर्क 3: गाँधीजी का सत्याग्रह भी यही सिखाता है — अन्याय के सामने मौन रहना उसे स्वीकार करना है।

अपवाद: कभी-कभी धैर्य और सहनशीलता रणनीतिक होती है (जैसे हीरा ने मोती को रोका), पर सदा सहते रहना अनुचित है।

उत्तर: हाँ, अत्याचार सहना अन्याय की स्वीकृति है; हीरा-मोती का प्रतिरोध यह सिद्ध करता है कि संघर्ष ही अत्याचार को रोकता है।

प्रश्न 6

"बहुत दिनों साथ रहते-रहते दोनों में भाईचारा हो गया था।" हीरा और मोती अभिन्न मित्र थे। कहानी की किन-किन घटनाओं के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है? कम से कम तीन बिंदु लिखिए।

हल

1. मूक-भाषा में विचार-विनिमय: दोनों आमने-सामने या आस-पास बैठकर एक-दूसरे से बिना बोले विचार साझा करते थे — यह गहरी मित्रता का प्रमाण है।
2. साँड से एकजुट होकर लड़ना: काँजीहाउस के बाहर जब बड़े साँड ने उन्हें घेरा, तो दोनों ने मिलकर उसका सामना किया — एक ने सींग मारा तो दूसरे ने सहारा दिया।
3. काँजीहाउस में एक-दूसरे के लिए त्याग: मोती रस्सी तोड़कर भागने में सफल हो गया, लेकिन जब उसने देखा कि हीरा अभी बँधा है, तो वह अकेले नहीं गया और हीरे की रस्सी तोड़ने में लगा रहा।
4. एक-दूसरे को संयमित रखना: जब मोती आवेश में आता था, हीरा उसे समझाकर रोकता था — 'हमारी जाति का यह धर्म नहीं है।' और मोती हीरे की बात मानता था।
5. 'हम और तुम': मोती ने कहा, 'हम और तुम इतने दिनों एक साथ रहे। आज तुम विपत्ति में पड़ गए तो मैं तुम्हें छोड़कर अलग हो जाऊँ?' — यह सच्ची मित्रता की अभिव्यक्ति है।

उत्तर: मूक-भाषा में सलाह-मशविरा, साँड से मिलकर लड़ना, और काँजीहाउस में एक-दूसरे के लिए रुकना — ये तीन घटनाएँ उनकी अभिन्न मित्रता सिद्ध करती हैं।

प्रश्न 7

"उसी समय मालकिन ने आकर दोनों के माथे चूम लिए।" कहानी में मालकिन और छोटी लड़की, दोनों के व्यवहार की तुलना कीजिए।

हल

मालकिन (झूरी की पत्नी) का व्यवहार:

— शुरू में मालकिन ने बैलों को द्वार पर देखकर जल उठी और कहा, 'कैसे नमक-हराम बैल हैं।'

— वह उन्हें नुस्खे के तौर पर 'खली के बजाय भूसा' देने की बात करती थी।

— परंतु जब बैल काँजीहाउस से लौटे और झूरी भी उन्हें गले लगा चुका था, तब मालकिन का हृदय भी पिघला और उसने दोनों के माथे चूम लिए।

गया के घर की छोटी लड़की (सौतेली माँ वाली) का व्यवहार:
— वह गया के घर में थी जहाँ बैलों के साथ कठोर व्यवहार होता था, फिर भी उसने छुपकर बैलों को रोटियाँ खिलाईं।
— रात को उसने बैलों का गराँव (रस्सी) खोल दिया और कहा, 'खोले देती हूँ। चुपके से भाग जाओ।'
— उसकी सहानुभूति बिना किसी स्वार्थ के थी — वह स्वयं सौतेली माँ की मार झेलती थी, फिर भी पीड़ितों के प्रति दयालु थी।

तुलना: मालकिन का प्रेम देर से और परिस्थितिवश जागा; लड़की का स्नेह शुरू से निःस्वार्थ और साहसपूर्ण था।

उत्तर: मालकिन का प्रेम परिस्थिति बदलने पर जागा; गया के घर की छोटी लड़की का निःस्वार्थ स्नेह और साहस शुरू से था — दोनों में छोटी लड़की का व्यवहार अधिक प्रेरणादायक है।

प्रश्नावली 1.3 — मेरी कल्पना मेरे अनुमान

प्रश्न 1

"उसने उनके माथे सहलाए और बोली– खोले देती हूँ। चुपके से भाग जाओ..." यदि आप वह छोटी लड़की होते, तो बैलों की मदद किस प्रकार करते?

हल

यदि मैं वह छोटी लड़की होता/होती, तो:
— सबसे पहले मैं रात के अँधेरे में जब घर के सब लोग सो जाते, चुपचाप बैलों के पास जाता/जाती।
— उन्हें खाना खिलाता/खिलाती और उनकी रस्सियाँ खोल देता/देती ताकि वे भाग सकें।
— उनके भागने के बाद मैं जोर से चिल्लाती/चिल्लाता कि 'बैल भाग गए!' — ताकि संदेह मुझ पर न पड़े (जैसा कि कहानी की लड़की ने भी किया)।
— इसके अलावा, मैं बैलों के बारे में किसी भरोसेमंद पड़ोसी या पशु-कल्याण संस्था को सूचना देने की कोशिश करता/करती।
— अंदर से डरते हुए भी मैं यह काम करता/करती क्योंकि पीड़ितों की मदद करना मनुष्य का धर्म है।

उत्तर: रात को रस्सी खोलकर बैलों को भागने में मदद करना और फिर खुद चिल्लाकर संदेह से बचना — जैसा कहानी की लड़की ने किया — यही सबसे व्यावहारिक सहायता होती।

प्रश्न 2

"दोनों गधे अभी तक ज्यों-के-त्यों खड़े थे।" भय और संकोच इंसान को अवसर मिलने पर भी जकड़े रखता है। क्या आप इस कथन से सहमत हैं? इस वाक्य के संबंध में कहानी और अपने अनुभवों से उदाहरण लेते हुए अपने विचार लिखिए।

हल

हाँ, इस कथन से पूर्णतः सहमत हूँ।
कहानी का उदाहरण: काँजीहाउस में जब मोती ने दीवार तोड़ी और सभी जानवरों के लिए रास्ता बना दिया, तो बाकी जानवर — गाय, बकरी, गधे — वहीं खड़े रहे। स्वतंत्रता का रास्ता उनके सामने था, फिर भी भय और संकोच ने उन्हें जकड़े रखा।
यह मानव जीवन में भी होता है — परीक्षा में जानते हुए भी डर से उत्तर न लिख पाना, सही बात जानते हुए भी भीड़ में न बोल पाना।
अनुभव: कक्षा में जब शिक्षक प्रश्न पूछते हैं तो अनेक छात्र उत्तर जानते हुए भी हाथ नहीं उठाते — यही भय और संकोच है।
निष्कर्ष: भय और संकोच से मुक्त होने के लिए साहस चाहिए; अवसर बार-बार नहीं आते।

उत्तर: हाँ, भय और संकोच अवसर होने पर भी इंसान को रोक देते हैं — काँजीहाउस के जानवरों और कक्षा के छात्रों का उदाहरण इसे सिद्ध करता है।

प्रश्नावली 1.4 — मेरे अनुभव मेरे विचार

प्रश्न 1

"दोस्तों में घनिष्ठता होते ही धौल-धप्पा होने लगता है। इसके बिना दोस्ती कुछ फुसफुसी, कुछ हल्की-सी रहती है, जिस पर ज़्यादा विश्वास नहीं किया जा सकता।" क्या आप इस बात से सहमत हैं? आपको ऐसा क्यों लगता है? अपने अनुभवों के आधार पर बताइए।

हल

हाँ, इस बात से काफी हद तक सहमत हूँ।
जब दो मित्रों के बीच वास्तविक घनिष्ठता होती है, तो वे एक-दूसरे के सामने स्वाभाविक रूप से पेश आते हैं — हँसी-मज़ाक, छेड़-छाड़, धौल-धप्पा सब होता है।
यह 'धौल-धप्पा' दर्शाता है कि दोनों के बीच कोई औपचारिकता नहीं, कोई डर नहीं — यही सच्ची दोस्ती की पहचान है।
जब दोस्ती केवल औपचारिक हो — 'जी हाँ, जी हाँ' — तो उसमें गहराई नहीं होती और विश्वास भी कम होता है।
अनुभव: मेरे सबसे अच्छे मित्र के साथ हम अक्सर मज़ाक करते हैं, गलतियाँ भी बताते हैं — और इसीलिए हम एक-दूसरे पर पूरा भरोसा करते हैं।
परंतु ध्यान रखना चाहिए कि धौल-धप्पा कभी चोट पहुँचाने वाला न हो।

उत्तर: सच्ची दोस्ती में स्वाभाविक हँसी-मज़ाक होता है; औपचारिक दोस्ती सतही होती है — हाँ, इस बात से सहमत हूँ।

प्रश्न 2

"हीरा ने तिरस्कार किया– गिरे हुए बैरी पर सींग न चलाना चाहिए।" "यह सब ढोंग है। बैरी को ऐसा मारना चाहिए कि फिर न उठे।" आपका इस संबंध में क्या विचार है? आप किसके साथ हैं — हीरा के या मोती के या दोनों के? क्यों?

हल

मैं हीरा के विचार से अधिक सहमत हूँ।
हीरा का पक्ष: 'गिरे हुए बैरी पर सींग न चलाना चाहिए' — यह भारतीय नैतिक मूल्य है। शत्रु जब असहाय हो जाए तो उस पर प्रहार करना कायरता है। इसमें क्षमा और उदारता की भावना है।
मोती का पक्ष: 'बैरी को ऐसा मारना चाहिए कि फिर न उठे' — यह व्यावहारिक दृष्टि से सही लग सकता है, लेकिन यह क्रूरता की ओर ले जाता है।
मेरा मत: हीरा का दृष्टिकोण अधिक मानवीय और नैतिक है। महाभारत, रामायण और गाँधी जी की शिक्षाएँ भी यही कहती हैं — शत्रु को भी सम्मान दो।
परंतु यदि शत्रु बार-बार आक्रमण करे, तो आत्मरक्षा के लिए दृढ़ता भी आवश्यक है — इस दृष्टि से मोती भी पूरी तरह गलत नहीं है।

उत्तर: हीरा का मत — गिरे हुए शत्रु पर प्रहार न करना — अधिक नैतिक और मानवीय है; परंतु आत्मरक्षा के लिए मोती का दृढ़ रुख भी कभी-कभी आवश्यक हो सकता है।

प्रश्न 3

"हम और तुम इतने दिनों एक साथ रहे। आज तुम विपत्ति में पड़ गए तो मैं तुम्हें छोड़कर अलग हो जाऊँ?" क्या कभी आपने किसी विपत्ति या चुनौती का सामना अपने किसी मित्र या परिजन के साथ मिलकर किया है? उस घटना के विषय में बताइए।

हल

यह प्रश्न व्यक्तिगत अनुभव पर आधारित है। संकेत के रूप में एक उत्तर:

हाँ, एक बार हमारी कक्षा में एक सहपाठी को अनजाने में किसी और की गलती का दोष लगा और उसे दंड मिलने वाला था।

मैंने और मेरे एक मित्र ने मिलकर शिक्षक से सच बताया — भले ही हम डरे हुए थे।

उस चुनौती का सामना मिलकर करने से दोस्ती और मजबूत हुई।

इस अनुभव ने सिखाया कि मित्र की विपत्ति में साथ खड़े रहना ही सच्ची मित्रता है।

उत्तर: व्यक्तिगत उत्तर — मित्र या परिजन की विपत्ति में साथ देना ही सच्ची मित्रता का प्रमाण है।

प्रश्नावली 1.5 — कहानी का सौंदर्य (विशेषता-तालिका)

प्रश्न 1

नीचे 'दो बैलों की कथा' की विशेषताओं की तालिका दी गई है जिसमें विशेषता, उसका अर्थ और NCERT द्वारा दिया गया उदाहरण 1 पहले से भरा है। प्रत्येक विशेषता के लिए कहानी से एक और उदाहरण (उदाहरण 2) खोजकर लिखिए— | विशेषता | विशेषता का अर्थ | उदाहरण 1 (NCERT द्वारा भरा) | उदाहरण 2 (छात्र भरें) | |---|---|---|---| | चित्रात्मकता | शब्दों के माध्यम से पाठक के मन में स्पष्ट और जीवंत चित्र या छवियाँ बनाना। | 'घुटने तक पाँव कीचड़ से भरे हैं, सहसा घर का द्वार खुला और वही लड़की निकली।' | (छात्र भरें) | | संवादात्मकता | कथ्य को आगे बढ़ाने के लिए, पात्रों के विचार, भाव आदि व्यक्त करने के लिए बातचीत और संवादों का प्रयोग। | 'मर जाऊँगा, पर उसके काम तो न आऊँगा।' | (छात्र भरें) | | विरोधाभास | एक ही प्रसंग या रचना में दो विपरीत या परस्पर विरोधी बातें एक साथ मौजूद होना। | 'झूरी बैलों को देखकर स्नेह से गद्गद हो गया। झूरी की स्त्री ने बैलों को द्वार पर देखा, तो जल उठी।' | (छात्र भरें) | | व्यंग्य | वह शैली जिसमें मज़ाक, हास्य या कटाक्ष (चुभते हुए संकेतों) के माध्यम से किसी दोष, कुरीति, अन्याय, पाखंड या कमज़ोरी को प्रकट किया जाता है। | 'भारतवासियों की अफ्रीका में क्या दुर्दशा हो रही है? अगर वे भी ईंट का जवाब पत्थर से देना सीख जाते तो शायद सभ्य कहलाने लगते।' | (छात्र भरें) | | संघर्ष | दो विरोधी शक्तियों, विचारों, इच्छाओं या परिस्थितियों का आपस में टकराना। | 'उससे भिड़ना जान से हाथ धोना है; लेकिन न भिड़ने पर भी जान बचती नहीं नज़र आती।' (बैल बनाम साँड) | (छात्र भरें) | | अतिशयोक्ति | किसी पात्र, घटना, भाव या वस्तु का वर्णन इतना बढ़ाकर करना कि वह असंभव या अविश्वसनीय लगे। | 'झूरी इन्हें फूल की छड़ी से भी न छूता था। उसकी जिट्टकार पर दोनों उड़ने लगते थे।' | (छात्र भरें) | | संदेह/उलझन | जब पात्र किसी निर्णय पर नहीं पहुँच पाता। | 'सारा दिन बीत गया और खाने को एक तिनका भी न मिला। समझ ही में न आता था, यह कैसा स्वामी है?' | (छात्र भरें) | इसके साथ ही, काँजीहौस/काँजीहाउस का अर्थ भी बताइए जो इस कहानी में आया है।

हल

उदाहरण 2 (प्रत्येक विशेषता के लिए कहानी से):

चित्रात्मकता — 'दोनों ने सिर झुकाकर उसका हाथ चाटने लगे। दोनों की पूँछें खड़ी हो गईं।' (एक जीवंत दृश्य आँखों के सामने उभर आता है।)

संवादात्मकता — हीरा और मोती का मूक-भाषा में संवाद: 'हीरा ने कहा — गिरे हुए बैरी पर सींग न चलाना चाहिए। मोती ने जवाब दिया — यह सब ढोंग है।'

विरोधाभास — 'मोती ने दिल में ऐंठकर रह गया।' (मोती क्रोधित था लेकिन हीरे की बात मानकर चुप रहा — भीतर उबाल, बाहर शांति।)

व्यंग्य — 'गधा सचमुच बेवकूफ है, या उसके सीधेपन, उसकी निरापद सहिष्णुता ने उसे यह पदवी दे दी है।' (समाज की 'सज्जनों को मूर्ख कहने' की प्रवृत्ति पर व्यंग्य।)

संघर्ष — हीरा और मोती का गया के यहाँ हल न चलाने का निर्णय — नए मालिक के अत्याचार बनाम बैलों का स्वाभिमान।

अतिशयोक्ति — 'हीरा और मोती दोनों दो-दो गाल सूखा भूसा खाकर भी दुर्बल न होते थे।' (प्रेम की शक्ति का अतिरंजित वर्णन।)

संदेह/उलझन — काँजीहाउस से निकलकर रास्ता भूलने पर: 'नए-नए गाँव मिलने लगे। तब दोनों एक खेत के किनारे खड़े होकर सोचने लगे, अब क्या करना चाहिए।'

काँजीहौस/काँजीहाउस का अर्थ: वह बाड़ा जिसमें दूसरे का खेत आदि खाने वाले या अनाथ चौपाए (पशु) बंद किए जाते और कुछ दंड लेकर छोड़े या नीलाम किए जाते हैं। ['काइन हाउस' से बना शब्द।]

उत्तर: सातों विशेषताओं के उदाहरण 2 कहानी से खोजे गए हैं: चित्रात्मकता (पूँछें खड़ी हो गईं), संवादात्मकता (हीरा-मोती का संवाद), विरोधाभास (मोती का भीतर उबाल-बाहर शांति), व्यंग्य (गधे पर व्यंग्य), संघर्ष (हल न चलाना), अतिशयोक्ति (भूसा खाकर दुर्बल न होना), संदेह (रास्ता भटकना)।

प्रश्नावली 1.6 — कहानी का समय और समाज (स्वतंत्रता आंदोलन मिलान)

प्रश्न 1

इस कहानी में से कुछ वाक्य चुनकर नीचे दिए गए हैं। इन वाक्यों का मिलान स्वतंत्रता आंदोलन से जुड़े उपयुक्त वाक्यों के साथ कीजिए— कहानी में से वाक्य: 1. जोर तो मारता ही जाऊँगा, चाहे कितने ही बंधन पड़ते जाएँ। 2. मर जाऊँगा, पर उसके काम तो न आऊँगा। 3. हमारी जान को कोई जान ही नहीं समझता। 4. दोनों मित्रों की आँखों में, रोम-रोम में विद्रोह भरा हुआ था। 5. इतना तो हो ही गया कि नौ-दस प्राणियों की जान बच गई। वे सब तो आशीर्वाद देंगे। 6. साँड पूरा हाथी है... पर दोनों मित्र जान हथेलियों पर लेकर लपके। स्वतंत्रता आंदोलन से जुड़ाव: 1. भगत सिंह और चंद्रशेखर आजाद जैसे क्रांतिकारियों ने बलिदान दिया, जिससे लाखों भारतीयों में आज़ादी की प्रेरणा जगी। 2. भारतीय जनता के मन में ब्रिटिश शासन के प्रति विद्रोह धीरे-धीरे गहराता गया। 3. ब्रिटिश साम्राज्य बहुत शक्तिशाली था, फिर भी स्वतंत्रता सेनानियों ने साहसपूर्वक उसका सामना किया। 4. दासता के काल में भारतीयों के प्राण, सम्मान और अधिकारों की कोई महत्ता नहीं थी। 5. स्वतंत्रता के लिए प्राण देना स्वीकार्य था, पर अंग्रेजों की सेवा में लगना अस्वीकार्य। 6. स्वतंत्रता सेनानी बार-बार जेल गए, फाँसी पर चढ़े, पर संघर्ष छोड़ने को तैयार नहीं हुए।

हल

सही मिलान:

कहानी का वाक्य 1 ↔ स्वतंत्रता आंदोलन का वाक्य 6:
'जोर तो मारता ही जाऊँगा, चाहे कितने ही बंधन पड़ते जाएँ।' — 'स्वतंत्रता सेनानी बार-बार जेल गए, फाँसी पर चढ़े, पर संघर्ष छोड़ने को तैयार नहीं हुए।'

कहानी का वाक्य 2 ↔ स्वतंत्रता आंदोलन का वाक्य 5:
'मर जाऊँगा, पर उसके काम तो न आऊँगा।' — 'स्वतंत्रता के लिए प्राण देना स्वीकार्य था, पर अंग्रेजों की सेवा में लगना अस्वीकार्य।'

कहानी का वाक्य 3 ↔ स्वतंत्रता आंदोलन का वाक्य 4:
'हमारी जान को कोई जान ही नहीं समझता।' — 'दासता के काल में भारतीयों के प्राण, सम्मान और अधिकारों की कोई महत्ता नहीं थी।'

कहानी का वाक्य 4 ↔ स्वतंत्रता आंदोलन का वाक्य 2:
'दोनों मित्रों की आँखों में, रोम-रोम में विद्रोह भरा हुआ था।' — 'भारतीय जनता के मन में ब्रिटिश शासन के प्रति विद्रोह धीरे-धीरे गहराता गया।'

कहानी का वाक्य 5 ↔ स्वतंत्रता आंदोलन का वाक्य 1:
'इतना तो हो ही गया कि नौ-दस प्राणियों की जान बच गई।' — 'भगत सिंह और चंद्रशेखर आजाद जैसे क्रांतिकारियों ने बलिदान दिया, जिससे लाखों भारतीयों में आज़ादी की प्रेरणा जगी।'

कहानी का वाक्य 6 ↔ स्वतंत्रता आंदोलन का वाक्य 3:
'साँड पूरा हाथी है... पर दोनों मित्र जान हथेलियों पर लेकर लपके।' — 'ब्रिटिश साम्राज्य बहुत शक्तिशाली था, फिर भी स्वतंत्रता सेनानियों ने साहसपूर्वक उसका सामना किया।'

उत्तर: 1↔6, 2↔5, 3↔4, 4↔2, 5↔1, 6↔3 — हीरा-मोती का संघर्ष भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का प्रतीकात्मक चित्रण है।

प्रश्नावली 1.7 — पशुओं के लिए कानून

प्रश्न 1

बैलों का काँजीहाउस में बंद होना न्याय और अन्याय दोनों को दर्शाता है। कैसे?

हल

न्याय का पक्ष:
— काँजीहाउस वह व्यवस्था है जहाँ किसी के खेत या फसल को नुकसान पहुँचाने वाले पशुओं को पकड़कर बंद किया जाता है। इससे किसानों की फसल की रक्षा होती है — यह न्यायसंगत है।
— दंड लेकर पशु वापस किया जाना कानूनी प्रक्रिया का हिस्सा है।

अन्याय का पक्ष:
— हीरा और मोती काँजीहाउस में भूखे-प्यासे रहे — 'सारा दिन बीत गया और खाने को एक तिनका भी न मिला।' पशुओं को भूखा रखना क्रूरता है।
— काँजीहाउस में पशुओं को पर्याप्त भोजन, पानी और चिकित्सा नहीं मिलती थी — यह अन्याय है।
— पशुओं को बिना किसी स्पष्ट दोष के भी लंबे समय तक बंद रखा जा सकता था।
निष्कर्ष: व्यवस्था के रूप में काँजीहाउस न्यायसंगत है, परंतु जिस प्रकार उसे चलाया जाता था — भूख, उपेक्षा और नीलामी — वह पशुओं के प्रति अन्यायपूर्ण था।

उत्तर: काँजीहाउस की व्यवस्था किसानों की फसल-रक्षा के लिए न्यायसंगत है, परंतु पशुओं को भूखा-प्यासा रखना और नीलाम करना अन्यायपूर्ण है।

प्रश्न 2

यदि आपको अवसर मिले तो आप बैलों की ओर से कौन-कौन से कानूनी अधिकार माँगेंगे?

हल

बैलों (पशुओं) के लिए निम्नलिखित कानूनी अधिकारों की माँग करेंगे:
1. भोजन और पानी का अधिकार: काँजीहाउस सहित सभी स्थानों पर पशुओं को पर्याप्त भोजन, स्वच्छ पानी और आश्रय मिलना चाहिए।
2. क्रूरता से मुक्ति का अधिकार: डंडे, लाठी या किसी भी उपकरण से अनावश्यक मार-पीट को कानूनी रूप से दंडनीय बनाया जाए।
3. चिकित्सा का अधिकार: बीमार या घायल पशु को पशु-चिकित्सा मिलनी चाहिए।
4. अत्यधिक काम से सुरक्षा: पशुओं से उनकी क्षमता से अधिक काम नहीं लिया जाना चाहिए।
5. नीलामी में न्याय: काँजीहाउस में बंद पशुओं की नीलामी से पहले मालिक को सूचित किया जाए।
6. पहचान का अधिकार: पशुओं का पंजीकरण हो ताकि उनके मालिक की पहचान हो सके।

उत्तर: भोजन-पानी का अधिकार, क्रूरता से मुक्ति, चिकित्सा सुविधा, अत्यधिक काम से सुरक्षा — ये प्रमुख कानूनी अधिकार पशुओं के लिए माँगे जाने चाहिए।

प्रश्न 3

मान लीजिए कि हीरा-मोती अपने साथ हुए अन्याय की शिकायत करना चाहते हैं। उनकी ओर से उनकी शिकायत थानाध्यक्ष को करते हुए एक पत्र लिखिए। (संकेत — 'थानाध्यक्ष महोदय, हमारा नाम... है। हमारे साथ अन्याय हुआ है...।')

हल

थानाध्यक्ष महोदय,
सेवा में,
थाना प्रभारी महोदय,
[स्थानीय थाना]

विषय: अत्याचार और अवैध रोक की शिकायत।

महोदय,
हमारा नाम हीरा और मोती है। हम दो बैल हैं जो झूरी किसान के घर रहते हैं। हमारे साथ निम्नलिखित अन्याय हुए हैं:

1. झूरी के साले गया ने हमें बिना हमारी सहमति के अपने घर ले जाकर जबरन हल में जोता।
2. गया ने हमें बिना कारण डंडों से मारा, विशेषतः हीरा की नाक पर लाठियाँ जमाईं।
3. हमें केवल सूखा भूसा दिया गया — पर्याप्त भोजन नहीं।
4. बाद में काँजीहाउस में डाला गया जहाँ सारे दिन भूखे रहे।

अतः आपसे निवेदन है कि हमारे विरुद्ध हुए अत्याचार की जाँच की जाए और हमें हमारे असली मालिक झूरी के पास भिजवाया जाए।

आपके आभारी,
हीरा और मोती (बैल, स्वामी झूरी, गाँव — ...)

उत्तर: थानाध्यक्ष को पत्र लिखा — गया द्वारा जबरन काम लेने, मार-पीट करने और काँजीहाउस में भूखा रखने की शिकायत की गई।

प्रश्नावली 1.8 — हमारी धरोहर और संस्कृति

प्रश्न 1

"वह अपना धर्म छोड़ दे लेकिन हम अपना धर्म क्यों छोड़ें!" कहानी के अनुसार हीरा और मोती सदैव ध्यान रखते थे कि कौन-से कार्य करने योग्य हैं और कौन-से नहीं। वे कौन-कौन से कार्य कभी नहीं करते थे?

हल

हीरा और मोती निम्नलिखित कार्य कभी नहीं करते थे —

1. गिरे हुए शत्रु पर प्रहार नहीं: हीरा ने मोती को रोका — 'गिरे हुए बैरी पर सींग न चलाना चाहिए।'
2. स्त्री पर प्रहार नहीं: हीरा ने स्पष्ट कहा — 'औरत जात पर सींग चलाना मना है।' (जब मोती मालकिन को सींग मारना चाहता था।)
3. अन्याय सहने पर भी अपनी जाति का धर्म नहीं छोड़ा: उन्होंने कभी मनुष्यों पर इतना प्रहार नहीं किया जिससे गंभीर चोट लगे — वे संयम रखते थे।
4. मित्र को संकट में नहीं छोड़ा: जब मोती अकेले भाग सकता था, तो वह हीरे को छोड़कर नहीं गया।
5. निर्दोष को नहीं सताया: छोटी लड़की के दयाभाव को देखकर वे उसे कभी नहीं सताते।

उत्तर: गिरे शत्रु पर प्रहार न करना, स्त्री पर सींग न चलाना, मित्र को संकट में न छोड़ना — ये हीरा-मोती के 'धर्म' थे जिन्हें वे कभी नहीं तोड़ते थे।

प्रश्न 2

"गिरे हुए बैरी पर सींग न चलाना चाहिए।" "लेकिन औरत जात पर सींग चलाना मना है, यह भूले जाते हो।" हीरा के ये कथन किन भारतीय मूल्यों की ओर संकेत करते हैं?

हल

हीरा के कथन निम्नलिखित भारतीय मूल्यों को दर्शाते हैं:

1. क्षमा और उदारता: 'गिरे हुए बैरी पर सींग न चलाना' — यह भारतीय परंपरा में क्षमा और उदारता का मूल्य है। महाभारत में भी कहा गया है कि पराजित शत्रु पर प्रहार वीरता नहीं।
2. स्त्री-सम्मान: 'औरत जात पर सींग चलाना मना है' — भारतीय संस्कृति में नारी को सम्माननीय माना गया है। 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते...' की परंपरा में स्त्री पर प्रहार करना कायरता और अधर्म है।
3. न्याय और धर्म: हीरा यह सुनिश्चित करता है कि प्रतिक्रिया न्यायसंगत हो — अत्याचारी को दंड देना उचित है, पर असहाय या स्त्री को नहीं।
4. संयम: क्रोध में भी संयम रखना — मोती के आवेश को हीरा अपनी समझदारी से नियंत्रित करता है।

उत्तर: हीरा के कथन क्षमा, स्त्री-सम्मान, न्याय और संयम जैसे भारतीय मूल्यों की ओर संकेत करते हैं।

प्रश्न 3

"दूसरे दिन गया ने बैलों को हल में जोता" (क) खेतों में जुताई के लिए बैल और हल कृषि के पारंपरिक उपकरण हैं। कृषि के अन्य पारंपरिक और आधुनिक उपकरणों तथा उनके उपयोग के विषय में पता लगाइए और लिखिए। (ख) भारत में बैल केवल पशु नहीं बल्कि कृषि संस्कृति का अभिन्न अंग हैं। लिखिए कि भारतीय गाँवों एवं शहरों में भी बैल किस-किस काम में सहायक होते हैं?

हल

(क) कृषि उपकरण:
पारंपरिक उपकरण — हल (जुताई), बैलगाड़ी (ढुलाई), हँसिया/दरांती (फसल काटना), थ्रेसर (मड़ाई), ओखली-मूसल (अनाज कूटना), कुदाल (मिट्टी खोदना), फावड़ा (गड्ढा खोदना), रहट/ढेकली (सिंचाई)।
आधुनिक उपकरण — ट्रैक्टर (जुताई, बुआई, ढुलाई), कंबाइन हार्वेस्टर (कटाई और मड़ाई), पावर टिलर (छोटे खेतों की जुताई), ड्रिप इरीगेशन (सिंचाई), बीज-बुआई मशीन, स्प्रे पंप (कीटनाशक)।

(ख) बैल के उपयोग:
गाँवों में — खेत जोतना (हल चलाना), अनाज ढोना (बैलगाड़ी), पानी खींचना (रहट), कोल्हू चलाकर तेल निकालना, अनाज की मड़ाई (खलिहान में चक्कर लगवाना)।
शहरों में — सामान ढोना (बैलगाड़ी), धार्मिक अनुष्ठानों में (नंदी की पूजा), जुलूस और त्योहारों में।
सांस्कृतिक महत्त्व — पोंगल, मकर संक्रांति जैसे त्योहारों में बैल पूजनीय हैं।

उत्तर: (क) पारंपरिक: हल, दरांती, रहट; आधुनिक: ट्रैक्टर, कंबाइन हार्वेस्टर। (ख) बैल खेत जोतने, ढुलाई, तेल निकालने और पानी खींचने में उपयोगी हैं।

प्रश्नावली 1.9 — अलग-अलग और साथ-साथ

प्रश्न 1

कहानी के आधार पर हीरा और मोती की विशेषताएँ लिखिए। (संकेत — धैर्यवान, गुस्सैल, मेहनती, शांत, सहनशील आदि)

हल

हीरा की विशेषताएँ:
— धैर्यवान और शांत: हीरा हमेशा मोती को संयमित करता है। 'नहीं भाई, खड़े हो जाओ।'
— नीतिपरक: वह जानता है कि कौन-सा काम धर्मसंगत है और कौन-सा नहीं।
— विचारशील: हर परिस्थिति में सोच-समझकर निर्णय लेता है।
— मित्र-प्रेमी: काँजीहाउस में मोती के जाने के बाद भी रुका रहा।

मोती की विशेषताएँ:
— साहसी और उत्साही: साँड से लड़ने में सबसे आगे, 'कहो तो दिखा दूँ कुछ मज़ा मैं भी।'
— भावुक और आवेशी: जल्दी क्रोध में आ जाता है — हीरे की नाक पर डंडे पड़े तो हल लेकर भाग गया।
— परिश्रमी: काँजीहाउस में रात-रात भर दीवार खोदता रहा।
— वफ़ादार: मित्र हीरे को छोड़कर अकेले नहीं भागा।

साझी विशेषताएँ: दोनों स्वाभिमानी, मित्र-प्रेमी, एकजुट और परिश्रमी हैं।

उत्तर: हीरा — धैर्यवान, विचारशील, नीतिपरक; मोती — साहसी, आवेशी, परिश्रमी; दोनों — स्वाभिमानी और वफ़ादार।

प्रश्न 2

हीरा और मोती की विशेषताएँ कुछ-कुछ समान और कुछ-कुछ अलग हैं, किंतु उनकी भिन्न विशेषताएँ एक-दूसरे को पूरा करती हैं। कैसे?

हल

हीरा और मोती की विशेषताएँ एक-दूसरे की पूरक हैं —
1. जहाँ मोती आवेश में आकर गाड़ी को सड़क की खाई में गिराना चाहता था, वहाँ हीरा ने संभाल लिया — 'वह ज्यादा सहनशील था।' हीरे का धैर्य मोती के उत्साह को नियंत्रित करता है।
2. जहाँ हीरा कभी-कभी अधिक सहन कर जाता, वहाँ मोती का साहस काम आता — साँड से भिड़ने में मोती आगे था।
3. मोती दीवार तोड़ने में शारीरिक बल लगाता, हीरा भागने का समय और तरीका सोचता।
4. दोनों मिलकर एक 'संपूर्ण इकाई' बनाते हैं — एक का धैर्य + दूसरे का साहस = सफलता।
निष्कर्ष: जिस प्रकार एक हाथ से ताली नहीं बजती, उसी प्रकार अकेला हीरा या अकेला मोती उतना सफल नहीं होता। दोनों मिलकर पूर्ण हैं।

उत्तर: हीरे का धैर्य मोती के साहस को संतुलित करता है और मोती का उत्साह हीरे की सहनशीलता को शक्ति देता है — दोनों की भिन्न विशेषताएँ मिलकर उन्हें पूर्ण बनाती हैं।

प्रश्न 3

आपकी कक्षा में भी कुछ-कुछ समान और कुछ-कुछ भिन्न विशेषताओं वाले सहपाठी हैं। बताइए कि आप भिन्न विशेषताओं वाले सहपाठी से अपने लिए कैसा व्यवहार चाहते हैं? उनसे पता कीजिए कि वे आपसे अपने लिए कैसा व्यवहार चाहते हैं? (संकेत — क्या-क्या करें और क्या-क्या न करें, कैसे पढ़ाई-खेल आदि में एक-दूसरे की सहायता करें और साथ दें)

हल

मैं अपने भिन्न विशेषताओं वाले सहपाठी से अपेक्षा करता/करती हूँ:
— मेरी कमज़ोरी का मज़ाक न उड़ाएँ, बल्कि सुधारने में मदद करें।
— यदि मुझे गणित में कठिनाई हो और उन्हें आसानी हो, तो वे मुझे समझाएँ।
— एक-दूसरे की राय का सम्मान करें, भले ही हम हर बात पर सहमत न हों।

मैं उनके साथ ऐसा करूँगा/करूँगी:
— उनकी रुचि वाले विषय में जहाँ मैं बेहतर हूँ, उनकी मदद करूँगा/करूँगी।
— खेल में टीम भावना रखूँगा/रखूँगी।
— एक-दूसरे की बात ध्यान से सुनूँगा/सुनूँगी।

निष्कर्ष: हीरा-मोती की तरह, भिन्नता में एकता ही सच्ची मित्रता है।

उत्तर: भिन्न विशेषताओं वाले सहपाठी से अपेक्षा है कि एक-दूसरे की कमज़ोरियों में मदद करें और शक्तियों का सम्मान करें — हीरा-मोती की तरह एक-दूसरे के पूरक बनें।

प्रश्न 4

"दोनों आमने-सामने या आस-पास बैठे हुए एक-दूसरे से मूक-भाषा में विचार-विनिमय करते थे।" कहानी में अनेक स्थानों पर 'मूक-भाषा' का उल्लेख किया गया है। आपके विचार से हीरा और मोती किस प्रकार आपस में बातें किया करते होंगे? अनुमान और कल्पना से बताइए।

हल

हीरा और मोती की मूक-भाषा में शायद होता —
— आँखों का इशारा: एक की आँखें दूसरे पर टिकी रहती होंगी; एक बार झाँकना = 'देख रहे हो?', दो बार = 'हाँ, समझ गया।'
— कान हिलाना: खतरे के संकेत पर कान खड़े करना, शांति में नीचे।
— पूँछ की भाषा: पूँछ ऊपर = उत्साह या प्रसन्नता; पूँछ नीचे = उदासी या निराशा।
— पाँव की थाप: धीरे पाँव ठोकना = 'चलो चलते हैं'; ज़ोर से = 'मैं तैयार हूँ।'
— साँसों की आवाज़: लंबी गहरी साँस = 'मैं थक गया/दुखी हूँ'; छोटी तेज़ = 'सावधान!'

वास्तव में, पशुओं में भी भाव-संचार की अपनी प्रणाली होती है जिसे हम पूरी तरह नहीं समझ पाते — प्रेमचंद ने इसे 'मूक-भाषा' कहकर सटीक नाम दिया।

उत्तर: आँखों के इशारे, कान-पूँछ की हरकतें, पाँव की थाप और साँसों की आवाज़ — इन सबसे मिलकर हीरा-मोती की 'मूक-भाषा' बनती होगी।

प्रश्नावली 1.10 — मार्ग खोजेंगे कैसे?

प्रश्न 1

हीरा-मोती अपने घर के मार्ग से भटक गए थे। क्या कभी आपके साथ ऐसा हुआ है कि आप रास्ता भूल गए या भटक गए? तब आपने अपने मार्ग का पता कैसे लगाया था?

हल

यह प्रश्न व्यक्तिगत अनुभव पर आधारित है। संकेत के रूप में एक उत्तर:
हाँ, एक बार जब मैं अपने माता-पिता के साथ किसी मेले में गया/गई, तो भीड़ में बिछड़ गया/गई।
मैंने निम्नलिखित तरीके अपनाए:
— पहले एक जगह खड़े होकर इधर-उधर देखा।
— पास की दुकान के बड़े-बुजुर्ग से मदद माँगी।
— फोन पर माता-पिता को call किया।
— पुलिस की मदद ली।
सीख: शांत रहना, किसी भरोसेमंद बड़े से मदद माँगना और एक जगह रुककर इंतजार करना सबसे सुरक्षित उपाय हैं।

उत्तर: व्यक्तिगत उत्तर — शांत रहना, पुलिस या बड़ों से मदद माँगना और फोन का उपयोग करना रास्ता खोजने के व्यावहारिक उपाय हैं।

प्रश्न 2

यदि कोई व्यक्ति भटक जाए तो उसे क्या करना चाहिए कि वह सुरक्षित रूप से अपने गंतव्य तक पहुँच जाए। कक्षा में चर्चा कीजिए और लिखिए। (संकेत — ऑनलाइन मानचित्र, पुलिस, स्कूल, सरकारी भवन, विद्यार्थी, सड़क पर लगे सूचना-पट, दुकानों के बोर्डों पर लिखे पते, डाकघर आदि।)

हल

यदि कोई व्यक्ति भटक जाए तो उसे निम्नलिखित करना चाहिए:
1. घबराएँ नहीं, शांत रहें — भय में गलत निर्णय होते हैं।
2. ऑनलाइन मानचित्र (Google Maps) का उपयोग करें यदि फोन हो।
3. नज़दीकी पुलिस स्टेशन या चौकी पर जाएँ।
4. स्थानीय लोगों से — दुकानदार, स्कूल का शिक्षक, डाकघर का कर्मचारी — मदद माँगें।
5. सड़क पर लगे सूचना-पट और दिशा-संकेत (signboards) पढ़ें।
6. किसी सरकारी भवन (पंचायत कार्यालय, अस्पताल) में जाएँ — वहाँ सहायता मिल सकती है।
7. परिवार या मित्र को फोन करें और अपनी वर्तमान स्थिति बताएँ।
8. यदि बच्चा है, तो किसी महिला पुलिस या स्कूल के पास जाना सबसे सुरक्षित है।

उत्तर: शांत रहना, ऑनलाइन मानचित्र, पुलिस/बड़ों से मदद, सूचना-पट पढ़ना और परिवार को फोन करना — भटकने पर ये उपाय अपनाने चाहिए।

प्रश्न 3

आपके विद्यालय में आपदा की स्थिति में निकासी का मार्ग दर्शाने वाला मानचित्र अवश्य होगा। उसे ध्यानपूर्वक देखिए और पता लगाइए कि आपदा की स्थिति में आपकी कक्षा के सबसे निकट और सुरक्षित कौन-सा मार्ग है।

हल

यह एक व्यावहारिक गतिविधि है जिसके लिए छात्र को अपने विद्यालय का निरीक्षण करना होगा।

सामान्य निर्देश:

1. विद्यालय के भूतल पर 'Emergency Exit' या 'आपातकालीन निकास' के संकेत देखें।
2. अपनी कक्षा के सबसे निकट दो निकास मार्गों की पहचान करें।
3. जाँचें कि वे मार्ग हमेशा बाधा-मुक्त हैं या नहीं।
4. आग, भूकंप या अन्य आपदा में शिक्षक के निर्देश पर उस मार्ग से निकलें।
5. मैदान में निर्धारित 'Assembly Point' पर एकत्र हों।

महत्त्वपूर्ण: इस अभ्यास के बारे में कक्षा में चर्चा करें और शिक्षक से पुष्टि लें।

उत्तर: व्यावहारिक गतिविधि — विद्यालय के आपातकालीन निकास मार्ग का अध्ययन करें; अपनी कक्षा के निकटतम दो निकास द्वारों की पहचान करें।

प्रश्नावली 1.11 — भाषा गढ़ते मुहावरे (व्याकरण की बात)

प्रश्न 1

कहानी में से नीचे दिए गए वाक्यों में मुहावरों को पहचानकर रेखांकित कीजिए। इन मुहावरों का प्रयोग करते हुए नए वाक्य बनाकर लिखिए— 1. "झूरी के साले गया को घर तक गोइ ले जाने में दाँतों पसीना आ गया।" 2. "उसका चेहरा देखकर अंतर्ज्ञान से दोनों मित्रों के दिल काँप उठे।" 3. "झूरी की स्त्री ने बैलों को द्वार पर देखा, तो जल उठी।" 4. "मोती दिल में ऐंठकर रह गया।" 5. "आएगा तो दूर ही से खबर लूँगा। देखूँ कैसे ले जाता है।" 6. "जी तोड़कर काम करते हैं, किसी से लड़ाई-झगड़ा नहीं करते, चार बातें सुनकर गम खा जाते हैं।" 7. "अगर वे भी ईंट का जवाब पत्थर से देना सीख जाते, तो शायद सभ्य कहलाने लगते।" 8. "तो फिर वहीं मरो। बंदा तो नौ-दो ग्यारह होता है।"

हल

मुहावरे और नए वाक्य:

1. दाँतों पसीना आना (अत्यधिक परिश्रम या कठिनाई होना)
मुहावरा: दाँतों पसीना आना
नया वाक्य: परीक्षा में वह प्रश्न इतना कठिन था कि उसे हल करने में दाँतों पसीना आ गया।

2. दिल काँप उठना (भय से हृदय काँप जाना)
मुहावरा: दिल काँप उठना
नया वाक्य: वह खबर सुनकर उसका दिल काँप उठा।

3. जल उठना (जलन होना, क्रोध या ईर्ष्या से व्याकुल होना)
मुहावरा: जल उठना
नया वाक्य: पड़ोसी का नया घर देखकर वह अंदर से जल उठी।

4. दिल में ऐंठकर रह जाना (क्रोध को दबाकर रह जाना, कुढ़कर रह जाना)
मुहावरा: दिल में ऐंठकर रह जाना
नया वाक्य: बेइज़्ज़ती सहकर भी वह दिल में ऐंठकर रह गया क्योंकि जवाब देने का अवसर न था।

5. खबर लेना (हिसाब लेना, मज़ा चखाना)
मुहावरा: दूर ही से खबर लेना
नया वाक्य: जो मुझे धोखा देगा, उसकी खबर लूँगा।

6. जी तोड़कर काम करना (पूरी शक्ति और लगन से काम करना); गम खा जाना (दुख को पीकर चुप रहना)
मुहावरे: जी तोड़कर काम करना; गम खा जाना
नया वाक्य (क): अच्छे खिलाड़ी जी तोड़कर अभ्यास करते हैं।
नया वाक्य (ख): उसने गम खाकर घर की सारी ज़िम्मेदारियाँ उठा लीं।

7. ईंट का जवाब पत्थर से देना (अत्याचार का डटकर जवाब देना, कठोर प्रतिकार करना)
मुहावरा: ईंट का जवाब पत्थर से देना
नया वाक्य: हमारे जवानों ने दुश्मन को ईंट का जवाब पत्थर से दिया।

8. नौ-दो ग्यारह होना (भाग जाना, नौ दो होकर ग्यारह यानी अलग हो जाना)
मुहावरा: नौ-दो ग्यारह होना
नया वाक्य: पुलिस को देखते ही चोर नौ-दो ग्यारह हो गया।

उत्तर: आठों मुहावरे — दाँतों पसीना आना, दिल काँपना, जल उठना, ऐंठकर रहना, खबर लेना, जी तोड़कर काम करना/गम खाना, ईंट का जवाब पत्थर से देना, नौ-दो ग्यारह होना — पहचाने गए और नए वाक्यों में प्रयोग किए गए।